महान जैव विविधता रखने वाला देश 'भारत'

डॉ अर्पिता अग्रवाल
साकेत, मेरठ

एक समय था जब पृथ्वी पर वन/जंगल बहुत अधिक थे, तब हमारे वन्यजीव और हमारी जैव विविधता संरक्षित थी। जंगल जैव विविधता के सृजक व पोषक हैं। जंगल पारिस्थितिकी तंत्र को जन्म देते हैं, आर्थिक लाभ पहुंचाते हैं और सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन को रसमय करते हैं। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में पर्यावरण संवर्धन और जैव संतुलन के प्रति सम्राट अशोक ने दूरदर्शी नीतियां अपनाई थीं। उन्होंने राजमार्गों के दोनों और छायादार वृक्ष लगवाए और पशु–पक्षियों के वध पर प्रतिबंध लगाया था।

धीरे–धीरे मानव की आबादी बढ़ती गई और उसने वनों को काटकर अपने लिए आवास बनाए, खेती–बाड़ी एवं उद्योगों के लिए भूमि का उपयोग किया जिससे जैव विविधता नष्ट होनी शुरू हुई, और हमारे वन्य जीवों पर संकट आया। 1757 में प्लासी का युद्ध जीतने के बाद अंग्रेजी शासन में शिकारियों को इनाम देने की प्रवृत्ति ने लाखों वन्य जीवों को काल–कलवित कर दिया। यही समय था जब भारतीय चीता विलुप्त हुआ। समुद्री जीवों को मछुआरों, शिकारियों ने नष्ट कर दिया। इसीलिए भारत में वन्य जीवों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए 1972 में वन्य जीव संरक्षण अधिनियम लागू हुआ और राष्ट्रीय पार्क, वन्यजीव अभ्यारण्य, व जैव मंडल आरक्षित क्षेत्र की स्थापना हुई। भारत सरकार द्वारा जैव विविधता से समृद्ध क्षेत्रों को राष्ट्रीय पार्क या वन्य जीव अभ्यारण या जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र के रूप में विशेष दर्जा व सुरक्षा प्रदान की गई। साथ ही समय–समय पर विभिन्न परियोजनाएं शुरू करके राष्ट्रीय पशु शेर, राष्ट्रीय धरोहर पशु हाथी, राष्ट्रीय जलीय जीव गंगा की डॉल्फिन और मगरमच्छ व गिद्ध को संरक्षित करने के प्रयास किए गए।

इस समय हमारे देश में 100 से अधिक राष्ट्रीय पार्क, 500 से अधिक वन्य जीव अभ्यारण, 80 से अधिक रामसर साइट्स हैं और 18 जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र हैं। राष्ट्रीय पार्कों में मानव गतिविधियां पूर्णतया प्रतिबंधित होती हैं। वन्यजीव अभ्यारण्य में मानव को निजी कार्य करने की अनुमति इस शर्त के साथ दी जाती है, कि पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचेगा। जैव मंडल आरक्षित क्षेत्र बहुत बड़े क्षेत्र होते हैं, जिनमें एक से अधिक राष्ट्रीय उद्यान शामिल हो सकते हैं।

इसके अंदर कुछ क्षेत्र ऐसे होते हैं जहां पर किसी के प्रवेश की अनुमति नहीं होती लेकिन इसके कुछ क्षेत्रों में मानव आवास बना सकता है और अपने निजी उद्योग भी चला सकता है अर्थात मानव और जैव विविधता में संतुलन स्थापित करने की कोशिश की जाती है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2000 में प्रतिवर्ष 22 मई को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाने की घोषणा की थी, तब से प्रतिवर्ष 22 मई को जैव विविधता दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। वर्ष 2025 की अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस की विषय वस्तु है ''प्रकृति और सतत विकास के साथ सामंजस्य''। हमारा जीवन प्रकृति पर निर्भर है। हमारी सांसों द्वारा छोड़ी गई कार्बन डाइऑक्साइड को पेड़ पौधे अवशोषित करके प्राण वायु ऑक्सीजन में बदलकर हमें वापस लौटाते हैं। हमारे क्रियाकलापों द्वारा वातावरण में छोड़े अन्य हानिकारक पदार्थों को भी पौधे अवशोषित करते हैं, जिससे हमें शुद्ध वातावरण मिलता है। पेड़ पौधों का हरा रंग आंखों को आराम देता है और उनके द्वारा खिलाए गए रंग–बिरंगे फूल जीवन में उत्साह भरते हैं। प्रकृति की स्मृति, सौंदर्य बोध, कला संयोजन, रंग संयोजन सब कुछ अद्भुत है। कैसे, कब, किस रंग के फूल खिलाने है, यह भी प्रकृति को पता होता है। प्रकृति हर कार्य कितनी सूझबूझ से करती है, बारिश आने से पहले एक खास प्रकार की लिली (rain Lily) का खिलना मानो उस पौधे को आसमान से कोई ऊर्जा ग्रहण करने की शक्ति प्राप्त हो कि अब मौसम बदलने वाला है। यह ज्ञान मनुष्य के पास नहीं है यह इस प्रकृति के पेड़–पौधों के पास ही है इसीलिए कहा जाता है कि पेड़ पौधों में जीवन है, वह बोल नहीं सकते लेकिन उनकी सूक्ष्म तरंगें बहुत से घटनाक्रमों को जान पाती हैं। वह मनुष्य से अधिक बुद्धिमान होते हैं। पौधे न सिर्फ मन की उदासी दूर करते हैं वरन् खुश रहने, स्वस्थ रहने का कारण भी होते हैं इसीलिए मनुष्य अपने घरों के आस–पास पौधे लगाते हैं और इसीलिए पुरातन काल में ऋषि मुनि वनों में रहा करते थे। विकास की तीव्रता के साथ ही मानव के स्वार्थी बनने की तीव्रता भी बढ़ती जा रही है वह सिर्फ अपने बारे में सोचता है प्रकृति द्वारा दिए गए मुफ्त के संसाधनों का दुरुपयोग करता है। आज जल बचाने के इतने अभियानों के बाद भी महंगी गाड़ियों को पाइप से धोते हुए, कई गैलन पानी व्यर्थ करते हुए लोग दिखाई देते हैं। लेकिन विकास की निरंतरता में प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाना ही होगा अन्यथा विकास का सुख उठाने के लिए हम बचेंगे ही नहीं। मनुष्य, पेड़ पौधे और सूक्ष्म जीव–जंतु सब एक दूसरे पर निर्भर हैं, भले ही हमें यह निर्भरता दिखाई नहीं देती लेकिन यदि किसी एक के अस्तित्व पर संकट आया

तो दूसरे का अस्तित्व भी संकट में पड़ जाएगा। यदि कोई एक प्रजाति विलुप्त हुई तो उसका प्रभाव अन्य कई प्रजातियों पर पड़ेगा।

पृथ्वी पर अलग–अलग स्थानों पर पाए जाने वाले जीवों, वनस्पतियों में विविधता पायी जाती है। किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में पाए जाने वाले जीवों एवं वनस्पतियों की संख्या एवं उनकी विभिन्न प्रजातियों को जैव विविधाता माना जाता है। विश्व के कुछ भौगोलिक क्षेत्रों में जैव विविधता अत्यधिक समृद्ध होती है, इन्हें ''मेगा विविधता क्षेत्र'' (Mega diversity area) कहा जाता है। मेगा विविधता देशों में पृथ्वी के जीवों व वनस्पतियों की प्रजातियों की अधिकांश संख्या उपलब्ध होती है, यहां उच्च मात्रा में जैव विविधता पाई जाती है। भारत विश्व के उन 17 देशों में है जिन्हें मेगा विविधता देश माना जाता है।

भारत में अनेक तरह के पारिस्थितिकी तंत्र हैं, स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र, समुद्रीय पारिस्थितिकी तंत्र और जलीय पारिस्थितिकी तंत्र, क्योंकि यहां वन, पहाड, मैदान, तटीय क्षेत्र, तराई, समुद्र व रेगिस्तान हैं अतः यहां सभी तरह के पारिस्थितिकी तंत्र पाये जाते हैं। भारत में 18 जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र (जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र) हैं। यूनेस्को के मानव और संरक्षित जैवमंडल कार्यक्रम (मैन एण्ड बायोस्फीयर प्रोग्राम, 'MAB') के आधार पर भारत के 18 में से 12 संरक्षित जैवमंडल क्षेत्र, विश्व के संरक्षित जैवमंडलों के नेटवर्क (वर्ल्ड नेटवर्क ऑफ जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र, (WNBR)) का भाग हैं। इस समय दुनिया के 100 से अधिक देशों में यूनेस्को द्वारा संरक्षित 700 से अधिक जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र हैं।

वर्ष 2000 में ''नीलगिरी जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र'' यूनेस्को के जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र नेटवर्क की सूची में शामिल होने वाला भारत का पहला जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र बना। पश्चिमी घाट में स्थित नीलगिरी जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र दक्षिण भारत की नीलगिरी पहाड़ियों पर स्थित है और केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु राज्यों में फैला है। यहां नीलगिरी तहर, मकाउ पाया जाता है। नीलगिरि तहर तमिलनाडु का राज्य पशु है।

वर्ष 2001 में ''मन्नार की खाड़ी'' (तमिलनाडु) एवं सुंदरबन जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र (पश्चिमी बंगाल) यूनेस्को के बायोस्फीयर नेटवर्क की सूची में शामिल हुए, ''सुंदरबन'' यूनेस्को के प्राकृतिक श्रेणी के विश्व विरासत स्थल की सूची में भी वर्ष 1987 में सम्मिलित हुआ। मन्नार की खाड़ी समुद्र तट है। यह 'डुगोंग' (समुद्री गाय) के लिए प्रसिद्ध है। यहां समुद्री जीव जंतुओं व वनस्पतियों की भरमार है। सुंदरबन गंगा का डेल्टा है। यह रॉयल बंगाल टाइगर के लिए प्रसिद्ध है। विश्व के सबसे बड़े मैंग्रोव वन यहां पाए जाते हैं। यहां सुंदरी के वृक्ष बहुतायत में मिलते हैं इन्हीं से इसे सुंदरबन नाम मिला है।

वर्ष 2004 में ''नंदा देवी बॉयोस्फीयर रिजर्व'' (उत्तराखंड) विश्व सूची में शामिल हुआ। वर्ष 1988 में यह प्राकृतिक श्रेणी का विश्व विरासत स्थल भी घोषित हुआ था। नंदा देवी रिजर्व पश्चिमी हिमालय में स्थित है और यह हिम तेंदुए, कस्तूरी मृग, हिमालयी तहर, रोडोडेन्ड्रोन वृक्ष के लिए प्रसिद्ध है।

वर्ष 2009 में ''नोकरेक राष्ट्रीय उद्यान'' (मेघालय), ''सिमलीपाल जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र'' (उड़ीसा), और ''मध्य प्रदेश का पंचमढ़ी जैव मंडल आरक्षित क्षेत्र'' तीनों विश्व सूची में शामिल हुए। नोकरेक राष्ट्रीय उद्यान पूर्वी हिमालय में हैं। यहां लाल पांडा और हुलाक बंदर पाए जाते हैं। यहां की विशेष स्थानीय पादप प्रजाति साइट्रस इंडिका (भारतीय जंगली नारंगी) है। माना जाता है कि इस संकटग्रस्त प्रजाति से ही विकसित करके भारत में खट्टे फलों की विभिन्न किस्में उगाई गई हैं। यह प्रजाति खट्टे फलों की आरम्भिक प्रजाति है। यह मेघालय की तूरा पहाड़ियों पर पाई जाती है। सिमलीपाल जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र दक्षिणी पठार में स्थित है। यहां रॉयल बंगाल टाइगर और जंगली हाथी पाए जाते हैं। पंचमढ़ी जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र सतपुड़ा की पहाड़ियों पर स्थित है। यहां उड़ने वाली गिलहरी व विशालकाय गिलहरी पाई जाती हैं।

वर्ष 2012 में मध्यप्रदेश का ''अचानकमार–अमरकंटक जैवमंडल क्षेत्र'' विश्व सूची में शामिल हुआ, अचानकमार–अमरकंटक जीव मंडल संरक्षित क्षेत्र मैकाल की पहाड़ियों में है। यहां चार सींग वाला हिरण पाया जाता है।

वर्ष 2013 में ''ग्रेट निकोबार जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र'' (अंडमान निकोबार द्वीपसमूह) विश्व सूची में शामिल हुआ, ग्रेट निकोबार द्वीप बंगाल की खाड़ी में स्थित है। यहां खारे पानी का मगरमच्छ पाया जाता है। यहां भारत का दक्षिण का अंतिम बिंदु इंदिरा पॉइंट भी स्थित है।

वर्ष 2016 में ''अगस्त्य मलाई जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र'' (केरल, तमिलनाडु) विश्व सूची में शामिल हुआ, अगस्त्य मलाई रिजर्व पश्चिमी घाट में स्थित है, यह नीलगिरी तहर और हाथी के लिए प्रसिद्ध है।

वर्ष 2018 में सिक्किम का ''कंचनजंगा जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र'' विश्व सूची में शामिल हुआ। दुनिया के सबसे ऊंचे पारिस्थतिक तंत्र में से एक ''कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान'' जो एक जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र (जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र) भी है, को वर्ष 2016 में ''मिश्रित'' श्रेणी की यूनेस्को धरोहर (विश्व विरासत स्थल) में भी शामिल किया गया। इस राष्ट्रीय उद्यान को खंगचेंद्जोंगा राष्ट्रीय उद्यान भी कहा जाता है। यह उद्यान 1,828 मीटर से 8,500 मीटर की ऊंचाई पर पूर्वी हिमालय में स्थित है। इस उद्यान के पश्चिम में कंचनजंगा पर्वत है जिसे गौरीशंकर पर्वत भी कहा जाता है। कंचनजंगा विश्व की तीसरी सबसे ऊंची पर्वतीय चोटी है। इसकी ऊंचाई 8,586 मीटर है। कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान को सिक्किम का प्रमुख पक्षी क्षेत्र माना जाता है। यहां अनेक हिम नदियां और बर्फानी झीलें हैं। यहां पाए जाने वाले कस्तूरी मृग, बर्फ में रहने वाला तेंदुआ, लाल पांडा और हिमालयी तहर (जंगली बकरी) इस क्षेत्र की प्रमुख विशेषताएं है। कंचनजंगा जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र यूनेस्को की संरक्षित जैवमंडल की सूची में शामिल होने वाला भारत का 11वां जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र बना।

वर्ष 2020 में मध्यप्रदेश का ''पन्ना टाइगर रिजर्व'' यूनेस्को की संरक्षित जैवमंडल (वर्ल्ड नेटवर्क ऑफ जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र) की सूची में शामिल हुआ। यह इस सूची में शामिल होने वाला भारत का 12 वां जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र है, और मध्य प्रदेश का तीसरा जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र है। पन्ना टाइगर रिजर्व केन नदी जलग्रहण क्षेत्र में स्थित है यहां वर्तमान में 50 से अधिक बाघ हैं। केन नदी, पन्ना टाइगर रिजर्व के मध्य से बहती है और यहां के आकर्षण का केंद्र है। यहां मगरमच्छ व अन्य जीव जंतु भी पाए जाते हैं। यह टाइगर रिजर्व मध्यप्रदेश के पन्ना व छतरपुर जिलों में फैला है।

भारत के उत्तर–पूर्व के राज्य, जैव विविधता की दृष्टि से दुनिया के सबसे संपन्न क्षेत्रों में से एक हैं। यहां विशेष रूप से आर्किड, बांस, फर्न, सिट्रस फल, केला, आम, जूट आदि की विभिन्न किस्में पाई जाती हैं। यह क्षेत्र चीन और म्यांमार की सीमा से सटे होने के कारण इन देशों की जैव विविधता को भी अपने में समेटे है। असम प्रदेश की बराक घाटी के जिले जैव विविधता की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, यहां अनेक विलुप्त प्रायः पादप और जंतु प्रजातियां पाई जाती हैं। सदाबहार व पतझड़ वन भी पाए जाते हैं। यहां 51 प्रकार के वन हैं जो 6 बड़े वर्ग में आते हैंः (i) उष्णकटिबंधीय नम पर्णपाती वन (इनकी पत्तियां पतझड़ में झड़ती हैं), (ii) उष्णकटिबंधीय अर्द्ध सदाबहार वन, (iii) उष्णकटिबंधीय बरसाती सदाबहार वन, (iv) उपोष्ण कटिबंधीय वन, (v) शुष्क वन तथा (vi) अल्पाइन वन। उत्तर पूर्व भारत में 11 संरक्षित वन्य राष्ट्रीय उद्यान है। यहां अनेक पादप व फूलों की प्रजातियां हैं। यहां सर्वाधिक पुष्प प्रजातियां हैं जिनमें अरुणाचल प्रदेश का पहला स्थान है, जहां लगभग 5000 प्रजातियां है, और दूसरा स्थान सिक्किम का है जहां 4500 प्रजातियां पाई जाती हैं।

प्रसिद्ध ब्रिटिश पर्यावरणविद नॉर्मन मायर्स ने वर्ष 1988 में उन स्थलों को हॉटस्पॉट नाम दिया जो जैव विविधता की दृष्टि से संवेदनशील हैं। हॉटस्पॉट असाधारण जैव विविधता से संपन्न व संकटग्रस्त क्षेत्र होते हैं। विश्व में इस समय 36 जैविक हॉटस्पॉट हैं। हॉटस्पॉट वह स्थान होते हैं जहां स्थान विशेष की समृद्ध जैव विविधता पाई जाती है जो पृथ्वी के अन्य भागों में नहीं पाई जाती, विभिन्न प्रकार के जीव–जंतु, वनस्पति इत्यादि जिनके क्षरण की संभावना मानव गतिविधियों के कारण होती है और कुछ हद तक क्षरण हो भी जाता है। यदि किसी कारणवश वहां जीव जंतुओं या वनस्पतियों की कोई प्रजाति नष्ट हो जाती है तो वह पृथ्वी से विलुप्त हो जाएगी क्योंकि वह अन्यत्र कहीं नहीं पाई जाती है। इसीलिए स्थान विशेष की जैव विविधता का संरक्षण करना अत्यंत आवश्यक है। ऐसे ही एक पक्षी डोडो पूरी दुनिया से विलुप्त हो गया था, क्योंकि वह केवल मॉरीशस में पाया जाता था और वहां उसकी संख्या खत्म हो गई थी।

विश्व के 36 हॉटस्पॉट में भारत के 4 हॉटस्पॉट शामिल हैं, पूर्वी हिमालय, पश्चिमी घाट, सुंडालैंड द्वीपों का समूह और भारत–बर्मा क्षेत्र। इन चारों हॉटस्पॉट का विस्तार पड़ोसी देशों की सीमाओं तक है।

पूर्वी हिमालय, उत्तर पश्चिम भारत तथा भूटान तक फैले हैं। इनमें भारत के सिक्किम, असम, अरुणाचल प्रदेश, और पश्चिम बंगाल राज्यों के क्षेत्र आते हैं। हिमालय पर्वत श्रृंखला असीम जैव विविधता से संपन्न है। यहां पुष्पीय पादप, सरीसृप, तितली, उभयचर, स्तनधारी जीवों की अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यहां के वन व घाटियां विशेष पादप जातियों से संपन्न हैं। यहां पर्वत, मैदान, जंगल व चारागाह हैं। यहां चीता, गिद्ध, हाथी, भैंस इत्यादि जानवर पाए जाते हैं।

पश्चिमी घाट में भारत के पश्चिमी घाट और श्रीलंका के द्वीप शामिल हैं। पश्चिमी घाट (भारतीय प्रायद्वीप के पश्चिमी तट के समानांतर हैं) हिमालय से प्राचीन माने जाते हैं। इन्हें 1988 में पारिस्थितिकीय हॉटस्पॉट घोषित किया गया था। यह विश्व के 8 सबसे बड़े जैविक विविधता वाले स्थलों में से एक है। यहां सदाबहार, अर्द्ध सदाबहार वन, घास के मैदान, वनस्पतियों व हजारों फूलों की प्रजातियां पाई जाती हैं। यह उच्च वर्षा का क्षेत्र है। यहां कई स्थानिक प्रजातियां जैसे नीलगिरी तहर, शेर की पूंछ वाला बंदर ''मकाउ'' पाया जाता है। यहां 2 जैवमंडल संरक्षित क्षेत्र और 14 राष्ट्रीय उद्यान हैं यहाँ पर यहां पर खिलने वाला नीलकुरिंजी का फूल 12 साल में एक बार खिलता है। पौधों की हजारों प्रजातियां ऐसी हैं जो केवल

वहीं पाई जाती हैं।

भारत–बर्मा क्षेत्र में संपूर्ण उत्तर पूर्वी भारत (असम व अंडमान द्वीप को छोड़ कर) आता है। यहां पक्षियों की विशिष्ट प्रजातियां, स्थानीय वनस्पतियां, स्तनपायी प्रजातियां और स्वच्छ पानी के कछुए पाए जाते हैं।

सुंडालैंड में भारत के निकोबार द्वीप समूह, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, ब्रुनई और फिलीपींस के द्वीप शामिल हैं। भारत के निकोबार द्वीप समूह में पौधों का विशाल भंडार स्थित है।

आज लोगों में जागरूकता की कमी, वनों की अंधाधुंध कटाई और अवैध शिकार ने कई जीवों, वनस्पतियों की प्रजातियों को विलुप्त कर दिया और अनेक विलुप्त होने की कगार पर हैं। आर्द्रभूमियों की भराई एवं इनसे जल की निकासी के चलते जैव विविधता की हानि हुई है। जंगल की आग से वन पारिस्थितिकी तंत्र को और सतत मछली पकड़ने से मूंगा चट्टानों को खतरा होता है। और इन्हीं कारणों से जलवायु परिवर्तित होने लगी है। पृथ्वी का औसत तापमान बढ़ने लगा है, जो जैव विविधता के नाश का सबसे बड़ा कारक है। तापमान में निरंतर बढ़ोत्तरी होने से अनेक प्रजातियां नष्ट हो जाएंगी।

जैव विविधता संरक्षण को सतत विकास और गरीबी उन्मूलन से जोड़ने के लिए जन सामान्य को शिक्षित/प्रशिक्षित भी करना होगा, तभी जैव विविधता को संरक्षित करने में जनमानस का सहयोग मिल पाएगा। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से और लोगों के सहयोग और सहभागिता से हमें अपने आस–पास पाए जाने वाले पौधों, पक्षियों, तितलियों, मधुमक्खियों आदि के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने में रुचि लेनी होगी। रासायनिक कीटनाशक और दवाओं का फसलों पर कम इस्तेमाल करके भी हम जैव विविधता संरक्षण में योगदान कर सकते हैं क्योंकि इन हानिकारक कीटनाशकों के छिड़काव से मनुष्य की जान जाने के समाचार भी सुनने को मिलते हैं और मधुमक्खियों के मरने के समाचार भी पढ़ने को मिले हैं। इन्हीं कारणों से गिद्धों की संख्या भी निरंतर कम होती जा रही है और जटायु जैसे बड़े गिद्ध तो विलुप्त प्रायः हो रहे हैं। गिद्ध हमारे पर्यावरण का सफाईकर्मी है, इसी तरह कछुए नदियों के सफाई कर्मी हैं। अकेले हमारी सरकार या संस्थाओं के प्रयासों से यह कार्य संभव नहीं होगा, जब तक हम सब व्यक्तिगत रूप से अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेंगे। हम प्लास्टिक के उपयोग को कम करके, ध्वनि प्रदूषण रोक कर और रात को घरों के बाहर तेज रोशनी नहीं करके, क्योंकि इससे पक्षियों की नींद में बाधा पड़ती है, अपना योगदान दे सकते हैं। स्थानीय ग्रामीण लोगों के पारंपरिक ज्ञान पर आधारित जैव संसाधनों का संरक्षण और उपयोग करना भारतीय परंपरा का हिस्सा है और इसे अपनाने से ही हम जैव विविधता संरक्षण कर पाएंगे।